 ISSN 2581-9917

जिन्दगी के बाद भी...

आशा त्रिपाठी*

समुद्र मंथन से निकले अमृत का पान करने के बाद स्वर्ग मे रहने वाले मृत्यु पर विजय प्राप्त कर चुके थे और देवत्व की उपाधि से विभूषित हुए लेकिन अमरत्व देवत्व की उपाधि से भी बड़ी उपाधि है जिसे देवता भी हासिल कर ना सके।

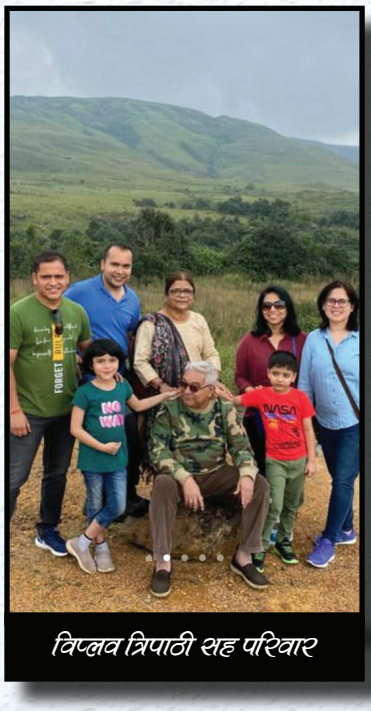

विप्लव त्रिपाठी सह परिवार

युद्ध भूमि में अपनी मातृभूमि के लिए प्राणोत्सर्ग करने वाला हर सैनिक अमरत्व को प्राप्त कर लेता है। वह मर कर भी नहीं मरता बल्कि अमर हो जाता है। वह अपने जीवन के बाद भी अपने देशवासियों के लिए प्रेरणा का पुंज बना रहता है। यही वजह है कि हर देश अपने सैनिकों पर गर्व करता है, जिन्दगी के साथ भी और जिन्दगी के बाद भी। हमारे देश में ऐसे देशभक्तों की कमी नहीं। यदि हम सेना में दिये जाने वाले सर्वोच्च सम्मान परमवीर चक्र की बात करें तो यह उल्लेखनीय है कि हमारे प्रधानमंत्री मोदीजी ने अंडमान में मौजूद 21 द्वीप समूहों का नामकरण देश के उन्हीं वीरों के नाम किया है और यह उतने ही गर्व की बात है कि उनमें से तीन, रायफलमैन संजय सिंह, सूबेदार योगेंद्र सिंह और सूबेदार मेजर ऑनरेरी कैप्टन बाना सिंह आज भी हमारे बीच मौजूद हैं, जो कारगिल विजय के आन-बान और शान के जीवन्त प्रतीक हैं। उसी तरह शांतिकाल में भी अदम्य साहस का परिचय देकर प्राण न्यौछावर करने वाले वीरों के लिए अशोक चक्र, कीर्ति चक्र और शौर्य चक्र हैं जो इन वीरों की शौर्य गाथाऐं बतलाती हैं। हर वो फौजी जो अपनी मातृभूमि के लिए वीरगति को प्राप्त होता है उसे अमरत्व की ही प्राप्ति होती है। अतः समाज का भी यह दायित्व है कि वह उनकी स्मृति को अक्षुण्ण बनाने में अपना योगदान दे ताकि आने वाली पीढ़ियां उनसे प्रेरित हो सकें।

I. यहां मैं अपने बेटे विप्लव त्रिपाठी का उल्लेख करूंगी जिसे बचपन से यूनीफार्म, फौज और फौजियों से एक विशेष अनुराग था। स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पं. किशोरीमोहन त्रिपाठी का पौत्र होना शायद यह भी एक वजह रही हो। सैनिक स्कूल रीवा से स्कूली शिक्षा प्राप्त करने के बाद उसे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी कोटे से किसी भी अच्छे इन्जिनियरिंग कॉलेज में सीट मिल सकती थी पर इसे नकारते हुऐ उसने यू.पी.एस.सी. की परीक्षा दी। अपने पहले ही प्रयास में उसने बोर्ड क्लीयर कर नेशनल डिफेंस एकेडमी में प्रवेश की पात्रता हासिल कर ली। यह घटना 1999 की है जब कारगिल युद्ध चल रहा था जिसे वह बड़े गौर से देखा करता था। युद्ध समाप्ति के पश्चात जब हमने उससे पुनः पूछा जाना है?

* स्वतंत्र लेखिका

शहीद विप्लव, अनुजा और कबीर

जवाब मिला : यदि मै पांच साल पहले पैदा हुआ होता तो मैं भी कारगिल युद्ध का हिस्सा होता। स्पष्ट था कि उसका निर्णय अटल है और उसे रोकना असंभव..। 2 कुमाउ रेजिमेंट का यह युवा जिसने महज अपने बाईस वर्ष पूरे कर तेइसवें में प्रवेश किया था उसे पहली पोस्टिंग मिली लेह लद्दाख के सियाचिन में और कैप्टन पद पर पदोन्नति के पश्चात् बतौर ए.डी.सी. के रूप में जम्मू कश्मीर घाटी के कुपवाड़ा में। छब्बीस वर्ष की उम्र में उसने कश्मीर वैली के 14, 15, 16 तीनों कोर में अपनी सेवाऐं दी। बिरले सैनिक होते हैं इतनी कम उम्र के। मेजर बना, विवाह हुआ फिर अबीर का जन्म और पदोन्नति की सीढियां पार करते हुए वह कर्नल बना। तीन वर्ष के डेप्यूटेशन पर उसे नार्थ ईस्ट 46-असम राइफल्स की कमान मिली मिजोरम के आइजोल में। ड्रग तस्करी पर ताबड़तोड़ कार्यवाही और युवाओं के उत्थान समानांतर वर्कशॉप ने एक वर्ष के पश्चात् ही मिजोरम के गवर्नर द्वारा उसकी बटालियन को साईटेशन दिलवाया तो वहीं ड्रग, हथियार, सोना तस्करों की आंखों में कमाडेंट विप्लव त्रिपाठी का नाम खटकने लगा। तस्कर माफियाओं की रडार पर वह आ चुका था। धमकियां भी मिली पर वह अपने मिशन पर अडिग रहा। मणिपुर में साथ रहने के दौरान यह बात उसने मुझसे कही भी थी। अंत में 13 नवंबर 2021, वह काला दिन, जब फारवर्ड पोस्ट से लौटने के दौरान अलगाववादियों के एक समूह ने एम्बुश लगाकर उसकी गाड़ी के ड्राइवर सहित विप्लव, अनुजा और अबीर तीनों को गोलियों से छलनी कर दिया। इस घटना में चार जवान भी वीरगति को प्राप्त हुए। हम माता-पिता यदि जीवित है तो इसी सुकून में कि जहां भी हैं वे तीनों साथ हैं।

जिन्दगी के बाद भी

73 और 78 वर्षीय माता-पिता को यदि संबल मिला तो रायगढ़ वासियों से जिन्होंने उन तीनों की स्मृति को बनाने के लिए हमसे हर सहयोग का आश्वासन दिया। इस तरह विप्लव त्रिपाठी मेमोरियल ट्रस्ट की शुरुआत हुई। जिसके रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया चल रही है। जो आगामी माह तक पूरी हो जाएगी।

विप्लव त्रिपाठी मेमोरियल ट्रस्ट

उद्देश्य (राष्ट्र हित सर्वोपरि)

1. स्कूल के बच्चों में राष्ट्रप्रेम जागृत करने हर वर्ष 20 मई (विप्लव के जन्मदिन) पर चित्रकला महोत्सव का आयोजन, पुरस्कार में देश के वास्तविक नायकों, वीर नारियों, पर्यावरण, देश के प्रसिद्ध मंदिर, पर्यटन स्थल से संबंधित पुस्तकों का वितरण।
2. वीर नारी अनुजा की स्मृति (11 मई) में शहर के चौराहे पर छांछ, शरबत का वितरण, मूक बधिर संस्था को एक माह का राशन।
3 नन्हें शहीद अबीर की स्मृति में (5 फरवरी) 7 से 10 वर्ष के बच्चों में राष्ट्र प्रेम और वीर रस कविता प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन।
4. सैनिक स्कूल रीवा में तीनों की स्मृति में स्कालरशिप के लिए पन्द्रह लाख रूपए का सहयोग किया गया।
5. छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिले में स्थापित सैनिक स्कूल अंबिकापुर में चयनित बच्चों को अबीर स्मृति पुरस्कार। सैनिक स्कूल अंबिकापुर से राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में जाने वाले बच्चे को विप्लव स्मृति पुरस्कार एवं बच्ची को अनुजा स्मृति पुरस्कार। यह घोषणा अभी की गई है।

ISSN 2581-9917

भविष्य में अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर ऐसी वीर नारियों का सम्मान जिन्होंने देश की रक्षा हेतु अपना पिता,भाई अथवा बेटा खोया है।

छायाचित्र : आशा त्रिपाठी

॥. जिस परिवार की दो पीढियों ने लगातार भारतीय रक्षा सेना में अपनी सेवाएं दी हो उस परिवार की तीसरी पीढ़ी में जन्म लेने वाला बच्चा क्या कोई दूसरा रास्ता चुन सकता है? बहरहाल अक्षय का बचपन से ही लक्ष्य निर्धारित रहा क्योंकि अक्सर बच्चों के पहले हीरो उनके पिता ही होते हैं। राष्ट्रीय मिलिट्री स्कूल से अपनी शिक्षा पूरी कर अक्षय ने राष्ट्रीय रक्षा एकेडमी की तकनीकी शाखा में प्रवेश लिया। एक फाइटर पायलट विंग कमांडर गिरीश कुमार और मेघना गिरीश के बेटे में एक योद्धा के गुण जन्मजात रूप से रहे। पिता का एक योद्धा सा जुझारूपन और मां (जो स्वयं एक फौजी परिवार से रही) का अनन्त धैर्य और साहस। नैसर्गिक रूप से ये गुण अक्षय ने अपने माता पिता से ही पाया होगा। बंगाल सेपर्स के 51, इन्जीनियर में कमीशन होने के बाद अपने नौ वर्ष के कार्यकाल में ट्रेनिंग के दौरान उसकी परफॉर्मेंस देखते हुए उसे न केवल इंस्टक्टर की ग्रेडिंग मिली बल्कि एक रेस्क्यू आपरेशन के लिए सन् 2010 में आर्मी कमेन्डेशन अवार्ड भी मिला। मेजर बनने के बाद 16 सितंबर 2016 को पूरी यूनिट की पोस्टिंग नगरौटा (जम्मू–कश्मीर) में हुई, एक हद तक आतंकियों के गढ़ में। 29 नवम्बर 2016 की वह मनहूस सुबह जब पुलिस की यूनीफार्म में जैश–ए'मोहम्मद के आतंकियों ने नगरौटा के आर्टिलरी यूनिट पर अटैक कर चार जवानों की हत्या कर दी। तमाम आतंकी एक इमारत में छिपे थे जहां स्थानीय लोग, स्त्री और बच्चे भी थे, जिन्हें वे बंधक के रूप मे उपयोग कर सकते थे। स्थिति की गंभीरता को समझते हुए मेजर अक्षय ने अपनी टीम के साथ दुश्मन के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया। अपने शौर्य का प्रदर्शन करते हुए मेजर अक्षय ने अपनी सुरक्षा को नजरअंदाज कर उस इमारत में रहने वाले परिवारों को सुरक्षित रूप से बचा लिया पर खुद को न बचा सके। उनके गोलियों और ग्रेनेड से छलनी शरीर को जब स्पेशल फोर्स द्वारा लाया गया तब वे वीरगति को प्राप्त हो चुके थे। बातचीत के दौरान एक बार मेघना जी ने बताया था कि अक्षय का विवाह हमने कुछ जल्दी ही कर दिया था पर आज मुझे इस बात का सुकून है कि उसने इतने कम समय में ही उसने बेटा, पति और पिता तीनों जिन्दगियां जी ली और सबसे महत्वपूर्ण यह कि एक फौजी की तरह संघर्ष करते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया।

अक्षय गिरीश मेमोरियल ट्रस्ट

उद्देश्य

1. युवाओं को रक्षा सेवा के साथ–साथ अन्य शासकीय सेवाओं में जाने हेतु वर्कशॉप और सेमिनार का आयोजन।

2. स्कूल के बच्चों को हर क्षेत्र के वास्तविक नायकों से प्रेरित और परिचित करना ताकि वे देश के जिम्मेदार नागरिक बनें।
3. शहीदों के परिवार से मिलकर उनकी मूलभूत जरूरतों को पूरा करना।
4. शहीदों के परिवार की पैरवी कर उन्हें यथासंभव मदद करना।
5. विजय दिवस (इन्डो–पाक युद्ध 1971, कारगिल विजय दिवस, 26 जुलाई 1999) का अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर भव्य आयोजन।

छायाचित्र : मेघना गिरीश

उपरोक्त कार्यों के अलावा अन्य सामाजिक-दायित्व स्त्री शिक्षा, जरूरतमंद बच्चों की शिक्षा में सहायता, कोविड के समय पी.पी.ई. किट, राशन, पंचायत को एम्बुलेंस की मदद के अतिरिक्त देश में सबसे ऊंचे तिरंगे (कश्मीर) की स्थापना में सहयोग।

मुझे तोड़ लेना बनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जाऐं वीर अनेक..

।।।. कैप्टन तुषार महाजन का जन्म शायद इन्हीं पंक्तियों की सार्थकता दर्शाने के लिए हुआ था। पिता देवराज और माता आशा देवी के घर जन्म लिए कैप्टन तुषार की कहानी एक समर्पित बलिदानी की कहानी है जिसने देशसेवा के लिये जन्म लिया, देश सेवा के लिए फौज ज्वाइन की और महज छब्बीस वर्ष की आयु में आतंकवादियों से लड़ते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। बचपन से ही सेना में जाकर आतंकियों का सफाया करने की दृढ़ इच्छा रखने वाले तुषार को 2006 में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में चयन होने पर उनके माता-पिता ने अनिच्छा के बावजूद उन्हें जाने से नहीं रोका।

छायाचित्र : देवराज महाजन

सन् 2010 मे भारतीय सैन्य अकादमी से अपना प्रशिक्षण पूरा कर, 9 पैरा एस.एफ. में सैन्य अधिकारी के रुप मे सेना ज्वाइन की। यहां यह उल्लेखनीय है कि कैप्टन तुषार एक प्रशिक्षित और कुशल गोताखोर भी रहे, साथ ही अंडर वाटर आपरेशन का भी उन्हें अनुभव रहा। 21 फरवरी 2016 को पुलवामा के पंपोर जिले में उद्यमिता विकास संस्थान में घुसे आतंकवादियों से मुठभेड़ में असाधारण वीरता का परिचय देते हुए अपना सर्वोच्च बलिदान दिया। उनके इस पराक्रम के लिए भारत सरकार द्वारा उन्हें शौर्य चक्र प्रदान किया गया। साथ ही उधमपुर के रेलवे स्टेशन का नाम शहीद कैप्टन तुषार महाजन रेलवे स्टेशन कर दिया गया।

कैप्टन तुषार महाजन मेमोरियल ट्रस्ट (2017)

उद्देश्य : शिक्षा, स्वास्थ्य, सामाजिक और देशभक्ति इन चार मुद्दों पर कार्य करना

1. शिक्षा के क्षेत्र में साधनविहीन, शिक्षा से वंचित बच्चों को हर संभव मदद करना तथा प्रतिभाशाली बच्चों को आगे बढ़ने को प्रोत्साहित करना।
2. स्वास्थ्य के क्षेत्र में उधमपुर के आसपास के गांवों में फ्री मेडिकल कैम्प करना। अब तक ट्रस्ट द्वारा पांच मेडिकल कैम्प आयोजित किए गये हैं, जिनमें 200 आई सर्जरी, 5 नोज सर्जरी तथा 200 श्रवण यंत्र बांटे जा चुके हैं। इसके अतिरिक्त कैंसर के रोगी को इलाज के लिए आर्थिक मदद भी समय-समय पर की गई। श्री देवराज जी ने करचा गांव के एक दिलचस्प

किस्से का वर्णन भी किया कि किस तरह तेरह वर्षीय एक बच्ची जिसे उसके माता पिता जन्मांध समझ चुके थे, उसे डाक्टरों की टीम द्वारा आपरेशन के बाद उसकी आंखों की रोशनी वापस लौट आई। उस बच्ची ने तेरह वर्ष की उम्र में पहली बार अपनी मां को देखा और पहचाना।

3. अनाथ और दिव्यांग बच्चों की मदद, निर्धन कन्या विवाह में आर्थिक सहयोग, कोविड-19 के दौरान गरीबों के बीच सूखा राशन, दवा का वितरण।

4. कैप्टन तुषार महाजन के बलिदान दिवस, 21 फरवरी, पर आसपास के शहीद परिवार के साथ प्रतिष्ठित व्यक्ति और बच्चों को आमंत्रित कर उनमें देश प्रेम की भावनाओं का विकास करना। हमारे देश के असली नायकों की कहानियां बताना और उनसे संबंधित फिल्में दिखाना। तुषार के माता पिता का यह मानना है कि यद्यपि तुषार हमारे बीच नहीं हैं लेकिन यह सब उसकी प्रेरणा से ही हो रहा है।

ऐसे नायकों की कहानियां अंतहीन होती हैं। केसरी फिल्म से पहले कितनों को सारागढ़ी के युद्ध की जानकारी थी? क्या आप मंगल पान्डे के नाम से परिचित थे? या आप ऐसे किन्हीं भी दस नायकों से परिचित हैं जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेकर अपना बलिदान दिया हो? आपने शैतान सिंह भाटी का नाम, फिल्म 121 बहादुर से पहले जाना था क्या? यदि नहीं तो सिर्फ इसलिए कि उनके बलिदान को अमिट रखने के कोई सार्थक प्रयास नहीं हुए। इसके लिए फिलहाल किसी पर दोषारोपण भी उचित नहीं लेकिन आज लोगों में जागरूकता है। इसके लिए कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी की भी एक अहम भूमिका रही है।

यदि आप याद करने की कोशिश करें तो यादों का सिलसिला खत्म नहीं होगा लेकिन यह सच है कि ऐसे हजारों नौजवान और भी हैं जो देश के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करते हैं पर उनका नाम गुमनामी के अंधेरों में गुम सा हो गया है। महज इसलिए कि उन्हें कोई सरकारी तमगा नहीं मिला। फिर भी उनके परिजन उनकी स्मृति में समाज के हित में, अपना योगदान देकर उनकी यादों को जीवित रखने के हर संभव प्रयास करने में अपनी पूरी उर्जा के साथ सक्रिय रहते हैं ताकि भावी पीढ़ी उनके त्याग और बलिदान से परिचित हों। समाज की इसमें भागेदारी नितांत जरूरी है। फिर चाहे वह सौरभ कालिया हो, किरण शेखावत हो, आशुतोष शर्मा हो या कोई और मैंने तो महज एक कैप्टन, एक मेजर और कर्नल का उदाहरण दिया है।

जयहिंद

❐❐❐